श्री नारायण गुरु

[स्रोत: डेकन हेराल्ड](#)

हाल ही में **केरल के शिवगिरि मठ** के प्रमुख ने मंदिर में प्रवेश करने से पहले **पुरुष श्रद्धालुओं द्वारा ऊपरी वस्त्र उतारने की प्रथा को समाप्त करने** का आह्वान किया और इसे एक **"कुप्रथा"** बताया।

- उनके अनुसार यह प्रथा, जो मूल रूप से पुरुषों द्वारा **"पुनुल" (ब्राह्मण वर्ग द्वारा धारण किया जाने वाल यज्ञोपवीत) धारण किया जाना सुनिश्चित करने हेतु शुरू की गई थी,** [श्री नारायण गुरु](#) के सामाजिक सुधार सिद्धांतों के विपरीत है।

श्री नारायण गुरु:

- **जन्म:** श्री नारायण का जन्म 22 अगस्त 1856 को केरल के चेम्पाज़ंथी में हुआ था। वे [एझावा जाति](#) से थे, जिसे तत्तकालीन सामाजिक मानदंडों के अनुसार 'अवर्ण' माना जाता था।
- **दर्शन:** उन्होंने **जातिगत भेदभाव का विरोध करते हुए समानता, शिक्षा और सामाजिक उत्थान** का समर्थन किया।
  - **उनका मूल विश्वास "मानवता के लिये एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर"** के नारे में व्यक्त होता है।
  - वह [आदि शंकराचार्य](#) द्वारा प्रणीत **अद्वैतवादी दर्शन,** [अद्वैत वेदांत](#) के प्रमुख समर्थक रहे।
- **सामाजिक सुधार:** उन्होंने हाशिये पर स्थित लोगों के उत्थान के लिये एक परोपकारी समाज, [श्री नारायण धर्म परिपालन योगम (SNDP)](#) की स्थापना की।
  - **अरुविप्पुरम आंदोलन (1888):** उन्होंने अरुविप्पुरम में एक शिव मूर्ति स्थापित की, जो सामाजिक अन्याय, विशेष रूप से उन जाति-आधारित प्रतिबंधों के खिलाफ प्रतिरोध का प्रतीक थी, जिसके अंतर्गत निम्न जातियों का मंदिर में प्रवेश प्रतिबंधित था।
  - उन्होंने **1904 में शिवगिरि मठ** की स्थापना की।
- **साहित्यिक योगदान:** उन्होंने कई महत्वपूर्ण रचनाएँ की, जिनमें ***[illegible], [illegible], [illegible], [illegible]*** **और** ***[illegible] [illegible]*** शामिल हैं।

और पढ़ें: [श्री नारायण गुरु](#)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/sree-narayana-guru-2